[This question paper contains 3 printed pages]

Roll No.

S. No. of Question Paper : **6089**

Unique Paper Code : **205302** **G**

Name of the Paper : Sahitya-Chintan 2

Name of the Course : **B.A. (H.) Hindi**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

**सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नाटक को परिभाषित करते हुए तत्वों के आधार पर उसका विवेचन कीजिए।

**अथवा**

कहानी के तत्वों का विवेचन कीजिए। 15

2. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) मुक्तछंद

(ख) रेखाचित्र। 7

3. लोकमंगल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

बिम्ब से आप क्या समझते हैं ? उसके प्रकारों को सोदाहरण समझाइए। 10

4. आधुनिकता एवं आधुनिक बोध का विवेचन कीजिए।

**अथवा**

काव्यानुभूति की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

5. विभावन व्यापार से आप क्या समझते हैं ?

**अथवा**

सहानुभूति और स्वानुभूति के अन्तर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

6. 'प्रगतिशील साहित्य और भाषा की समस्या' निबन्ध के आधार पर रामविलास शर्मा की प्रगतिशी साहित्य-धारणाओं को स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

'काव्य में लोकमंगल' निबंध का संक्षेप प्रस्तुत कीजिए।

7. हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध–'आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएँ' का सार लिखिए।

**अथवा**

निम्नांकित गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमें सुन्दरता की कसौटी बदलनी होगी। अभी तक यह कसौटी अमीरी और विलासिता के ढंग क थी। हमारा कलाकार अमीरों का पल्ला पकड़े रहना चाहता था, उन्हीं की कद्रदानी पर उसका अस्तित अवलम्बित था और उन्हीं के सुख-दुःख, आशा-निराशा, प्रतियोगिता और प्रतिद्वन्द्विता की व्याख्या कर का उद्देश्य था। उसकी निगाह अन्तःपुर और बंगलों की ओर उठती थी। झोपड़े, खंडहर उसके ध्या के अधिकारी न थे। उन्हें वह मनुष्यता की परिधि से बाहर समझता था। कभी इनकी चर्चा कर

था, तो इनका मज़ाक उड़ाने के लिए, ग्राम-वासी की देहाती वेष-भूषा और तौर-तरीकों पर हंसने के लिए। उसका शीन-काफ़ दुरुस्त होना या मुहाविरों का गलत उपयोग उसके व्यंग्य-विद्रूप की स्थायी सामग्री थी। वह भी मनुष्य है, उसके भी हृदय है और उसमें भी आकांक्षाएं हैं—यह कला की कल्पना से बाहर की बात थी। (साहित्य का उद्देश्य; प्रेमचंद)

(क) प्रेमचंद सुन्दरता की जिस कसौटी को बदलने की जरूरत महसूस कर रहे हैं, उसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'उसके भी हृदय है और उसमें भी आकांक्षाएँ हैं'—से क्या तात्पर्य है ? 4+4=8